रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ३: रूहानी रवानगी (आत्मिक पथ)

रूहानी रवानगी, आत्मिक पथ, तौहीद को देखने, अनुभव करने और बाँटने के लिए जिज्ञासु नज़रवान की पहली उदासी। गुरु नानक ने 'शक्करगंज' की गद्दी से जुड़े सूफ़ी फ़कीरों से रूहानी गोष्ठी की।

जागहु जागहु सूतिहो चलिआ वणजारा ॥
(राग आसा काफी, गुरु नानक)

जागो, जागो, ओ सोते हुए लोगों, बंजारा विदा हो रहा है।
(राग आसा काफी, गुरु नानक)

गुरु नानक पैंतीस साल की उम्र में, सन पंद्रह सौ चार में समाज की आत्मा को झकझोरने और अज्ञानता की नींद से जगाने के लिये नई मुहिम पर चल पड़े।

सुल्तानपुर लोधी से चलते समय वह अपनी बहन बेबे नानकी के घर गये और उनसे अपनी ग़ैर-हाज़िरी में परिवार का ख़्याल रखने की बिनती की। बेबे नानकी और माता सुलखनी के हामी भरने के बाद, गुरु नानक और भाई मरदाना सुल्तानपुर से सैदपुर गये, जो अब ऐमनाबाद नामक शहर है।

हम अब सुल्तानपुर लोधी से गुरु नानक की यादों के साथ जुड़ने के लिए पाकिस्तान के शहर अैमनाबाद जा रहे हैं।

अैमनाबाद के विनम्र से बढ़ई भाई लालो ने गुरु नानक और भाई मरदाना का स्वागत किया और उन्हें अपने घर रहने के लिए निमंत्रण दिया। भाई लालो के घर में रहने के दौरान, गुरु नानक ने अपना ज़्यादा समय रोड़ी वाली सुनसान जगह में बिताया।

अमरदीप सिंह: उनका मकसद आने वाले वर्षों में लंबी और मुश्किल उदासियों के लिए रूहानी और शारीरिक तैयारी करना था। उन्होंने अपनी ख़ुराक घटाई, ध्यान लगाने में समय बिताया और रोड़ी पर सोऐ।

यह गुरुद्वारा निर्माणकला का अजूबा है, जिसकी ईंटों की चिनाई का कलात्मक अंदाज़ निराला है। इसे बनाने वाले मिस्त्री मौलिक और नवीन थे। उन्होंने ईंटों के साथ डाटों पर गुरुमुखी अक्षरों में गुरु नानक की बाणी दर्ज की है। विभाजन से पहले के पंजाब में वैसाखी का सालाना मेला इसी गुरुद्वारे के मैदान में लगता था, जहां हर धर्म के लोग धूमधाम के साथ आते थे। उन्नीस सौ सैंतालिस के बटवारे के दौरान हुए पलायन के बाद सारा नज़ारा ही बदल गया।

अमरदीप सिंह: यह गुरुद्वारा रोड़ी साहिब, ऐमनाबाद में गुरु नानक के गांव के बाहर ठहराव की याद में बनाया गया है। इस ठहराव के बाद उन्होंने भाई मरदाने के साथ अपने सफ़र की शुरुआत की।

पाकिस्तान की सरकार ने उन्नीस सौ तिरानबे में गुरुद्वारा रोड़ी साहिब की सेवा सम्भाल शुरू करवाई। तब से संगत ने दोबारा यहां आना शुरू किया।

हम गुरुद्वारा भाई लालो गये। माना जाता है कि इस जगह पर भाई लालो का निवास था। इस गुरुद्वारे का निर्माण महाराजा रणजीत सिंह के राज में हुआ। बटवारे के बाद यहाँ उन्नीस सौ तिरानबे तक शरणार्थियों का बसेरा था।

ऐमनाबाद के जागीरदार मलिक भागो ने अशराफ़ वर्ग के लिए 'दिव्य भोज' का आयोजन किया। गुरु नानक ने उस भोज में शामिल होने के निमंत्रण को ठुकरा दिया था। मलिक भागो के अहंकार को ठेस लगी। उसने गुस्से में गुरु नानक से सवाल किया कि उसके निमंत्रण को ठुकरा कर नीची जाति के बढ़ई भाई लालो की मेज़बानी को क्यों स्वीकार किया?

अमरदीप सिंह: गुरु नानक ने जवाब दिया कि मेहनत की कमाई से बनी भाई लालो की रोटी में दूध जैसी मिठास है। अगर वह मलिक भागो के घर खाना खाएंगे तो यहां के पकवानों का स्वाद खून की तरह होगा क्योंकि यह ग़रीब लोगों के हक मार कर लूटी हुई कमाई से बना है।

ऐसे जन विरले जग अंदरि परखि खजानै पाइआ ॥
जाति वरन ते भए अतीता ममता लोभु चुकाइआ ॥
नामि रते तीरथ से निरमल दुखु हउमै मैलु चुकाइआ ॥
नानकु तिन के चरन पखालै जिना गुरमुखि साचा भाइआ ॥
(राग प्रभाती, गुरु नानक)

इस दुनिया में चुनिंदा लोग हैं जो आत्म-मंथन का सच्चा ख़ज़ाना हासिल करते हैं।
जाति और रंग की हदों से ऊपर उठकर के वह बंधन और लालच से छुटकारा पा लेते हैं।
आत्मचिंतन की पवित्रता में एक-सूरत रहना तीर्थ के समान है। इस ध्यान से वह दर्द और अहंकार की गंदगी से छुटकारा पा लेते हैं।
नानक उन गुरमुखों से बलिहारी जाते हैं जिन्हें सच का अहसास हुआ है।
(राग प्रभाती, गुरु नानक)

इस पदार्थवादी दुनिया में अनोखे लोग हैं जो अज्ञानता के अंधेरे से छुटकारा पा लेते हैं और ज्ञान की रोशनी में विवेक के रास्ते पर चलते हैं।

इस वाक से गुरु नानक के दर्शन में सामाजिक इंसाफ़, इंसानी हक़ूक और ईमानदारी का महत्व स्पष्ट होता है। उन्होंने समझाया कि किसी जाति या धर्म में जन्म लेने वाला व्यक्ति कमज़ोर या बेहतर नहीं होता बल्कि कर्मों से फ़ैसला होता है।

हक पराइआ नानका उस सूअर उस गाइ ॥
गुरु पीर हामा ता भरे जा मुरदार न खाइ ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

नानक ने फ़रमाया कि पराया हक मारना मुसलमान के लिए सूअर और हिन्दू के लिए गाय खाने के बराबर है।
रूहानी रहबर ऐसा करने वालों के साथ हैं जो किसी के हक़ को नहीं मारता,
क्योंकि यह मुर्दा खाने जैसा कर्म है।
(राग माझ, गुरु नानक)

गुरु नानक ने सख़्त शब्दों में फटकार लगाई कि किसी के हक को मारना मुर्दा खाने जैसा कर्म है। सच्ची जीवन शैली ही मानव मुक्ति का मार्ग बता सकती है। मज़हबी अनुष्ठानों के नाम पर अधर्म ना तो उचित है और ना ही स्वीकार्य।

भाई मरदाना ने पाकपटन में बाबा शेख़ फ़रीद शक्करगंज की मज़ार में ज़िआरत करने की इच्छा ज़ाहिर की।

अैमनाबाद से गुरु नानक और भाई मरदाना मख़दूमपुर पाहोराण, हड़प्पा और बुरेवाला के रास्ते पाकपटन पहुंचे।

पैदल और किश्ती से सफ़र करते हुए गुरु नानक और भाई मरदाना ने रावी दरिया के किनारे बसे नगर तुलम्बा में ठहराव किया। यह जगह अब मख़दूमपुर पाहोराण के नाम से जानी जाती है।

हम गुरु नानक की यादों का अहसास करने के लिये मख़दूमपुर पाहोराण गये।

अमरदीप सिंह: लाहौर और मुल्तान में व्यापार के लिए मख़दूमपुर पाहोराण अहम जगह थी। माना जाता है कि यहीं पर सज्जन नाम के व्यकती की धर्मशाला थी। अपनी बेकाबू इच्छाओं के कारण वह धर्मशाला में ठहराव करने वालों के साथ लूटमार करता था।

हम उस जगह आए हैं जहां माना जाता है कि यहां कभी सज्जन की धर्मशाला थी और जहां पर बाद में गुरुद्वारा बनाया गया था परन्तु अब यह सरकारी स्कूल है।

सज्जन अपने-आप को भले इंसान के तौर पर पेश करने के लिए संत के भेष में रहता था। हर धर्म के यात्रियों को बहकाने के लिए, उसने हिंदुओं के लिए मंदिर और मुसलमानों के लिए मस्जिद बनवाई हुई थी। यात्रियों को अपनी तरफ खींचने के लिए सज्जन मुफ़्त खाने और रैन बसेरे का लालच देता था। गुरु नानक ने सज्जन के भेष में छुपे हुए ठग को पहचान लिया।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक अपनी बाणी की ताकत से आसानी से इंसानों की फितरत को बदल देते थे। सज्जन को उसकी ग़लती का अहसास करवाने के लिए भाई मरदाने को रबाब बजाने के लिए कहा और दोनों ने गाया:

चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कित ॥
नानक नाम समाल तूँ बधा छुटह जित ॥
(राग सूही, गुरु नानक)

अच्छे व्यवहार के बिना सेवा और ज्ञान के कोई मायने नहीं हैं। एक तरफ अच्छाई और दूसरी तरफ चालाकी।

नानक ने फ़रमाया कि सोच-विचार के साथ ही मन को बुरे ख़्यालों से छुटकारा मिल सकता है।
(राग सूही, गुरु नानक)

नेक प्राणी अपने ज़मीर की आवाज़ सुनता है। आत्ममंथन के जरिए ही मन को दुनियादारी की इच्छाओं से मुक्ति मिल सकती है।

इन शब्दों को सुनकर सज्जन ठग को अपने कुकर्मों का अहसास हुआ तब उसने अपने व्यवहार में तब्दीली की, जो अब उसके नाम के साथ मेल खाती थी।

अमरदीप सिंह: यह गुरुद्वारा सज्जन के व्यवहार में तब्दीली हो जाने की याद में बनाया गया था।

सज्जन में आई तब्दीली के बारे विचार करते हुए, मैं सोचता हूँ कि कुकर्म क्या है?

मनमुख की मत कूड़ विआपी ॥
बिन हरि सिमरण पाप संतापी ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

बेलगाम मन की बुद्धि बुराई में लीन रहती है।
विचारहीन ज्ञान अनैतिकता को जन्म देता है।
(राग आसा, गुरु नानक)

अहंकार और लालच के वश में पड़े मन का रूहानी, भावनात्मक और शारीरिक संतुलन बिगड़ जाता है। इस के साथ मनुष्य का अपना और अन्य लोगों का अनदरूनी और शारीरिक संतुलन भी बिगड़ जाता है। अहंकार और लालच की बेकायदगी ही कुकर्म है।

अमरदीप सिंह: मैं इस गुरुद्वारे की चार-दीवारी के नज़दीक स्कूल के कमरे में बैठा हूँ, जो उन्नीस सौ सत्तह में बना था। इस इमारत का निर्माण करने वाली समुदाय तो उन्नीस सौ सैंतालीस में पलायन कर गई परन्तु स्कूल अभी भी विद्या का प्रसार करता है। गुरु नानक की ज्ञान बांटने और विवेकवान बने रहने वाली प्रथा फल-फूल रही है।

कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा ॥
तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा ॥
(भगत कबीर)

मेरा मुझमें कुछ नहीं।
जो कुछ है सब तेरा।
तेरा तुझको सौंप के, क्या लागे मेरा।
(भगत कबीर)

भगत कबीर ने गहरी बात को पकड़ा है, "मेरा कुछ नहीं, सब तेरा है और मैं तेरा, तेरे हवाले करता हूँ।" देखिए कादर के आदेश का चमत्कार, ज्ञान बांटने और विवेकदान का प्रबंध करने वाले समुदाय ने मानव कल्याण में योगदान दे दिया है।

गुरू नानक और भाई मरदाना ने मख़दूमपुर पहोरान से हड़प्पा के लिए चल पड़े।

हम अब सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़े ऐतिहासिक शहर जा रहे हैं। खुदाई किया गया यह स्थान 2000 इसा पूर्व का है। हम उस जगह जा रहे हैं जहां गुरुद्वारा नानकसर बनाया गया था परन्तु अब वहां सरकारी स्कूल चल रहा है।

अमरदीप सिंह: तुलम्बा से, जो अब मख़दूमपुर पाहोराण जाना जाता है। गुरु नानक और भाई मरदाना रावी नदी के साथ-साथ उत्तर की तरफ किश्ती से सफ़र या पैदल चल कर हड़प्पा शहर पहुंचे। यह गुरुद्वारा उनके हड़प्पा में आने की याद में बनाया गया।

੧ੴ सति गुर प्रसादि ॥
(गुरु नानक)

हाज़रा-हज़ूर का अहसास सच्चे गुरु की अगवाई में ही होता है।
(गुरु नानक)

यह मज़बूत नींव गुरु नानक ने रखी है जो प्रतिदिन चढ़ती जाती है। इसका नींव पत्थर कामलिया गाँव के श्रीमान संत संगत सिंह जी महाराज ने रखा था।

उन्नीस सौ सैंतालीस के बंटवारे के बाद इस क्षेत्र में से पलायन हुआ और प्रवासी आ कर बस गये। यह स्थान कई साल उजाड़ रहा परन्तु बाद में दोबारा यहां से ज्ञान बाँटने का सच्चा काम शुरू हो गया।

इन विधार्थियों को परीक्षाओं में बैठे देख कर मैं सोचता हूँ कि मौजूदा दौर में ख़ौफ़ पैदा करने वाला मुकाबलेबाज़ी का इंतज़ाम, समाज के भले में कितना लाभदायक होगा।

अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥
जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्मारी ॥
(राग बिलावल, गुरु नानक)

अथाह, अबोध, अकथनीय और अनंत ने मेरे संशय ख़त्म कर देने हैं।
समुन्द्रों, ज़मीनो और पाताल में सर्वव्यापी का वास है जिसकी जोत हर जीव में है।
(राग बिलावल, गुरु नानक)

हर हालात में हमें संजीदा उपाय करने चाहिए और अविश्वास के ख़ौफ़ से बेपरवाह रहना चाहिए।

स्थानीय रीति-रिवाज़ के मुताबिक गुरु नानक और भाई मरदाना हड़प्पा से बुरेवाला के नज़दीक हज़रत बाबा हाजी शेर की मज़ार पर गए।

अमरदीप सिंह: हम बाबा रफ़ीक दुखी से मिलने बुरेवाला जा रहे हैं। उन्होंने बाबा हाजी शेर का स्थान और बुरेवाला का गुरुद्वारा दिखाने की हमारी प्रार्थना स्वीकार की है।

आशिक नमाज़ पढ़ते हैं, आज़ान के बग़ैर ॥
इस इश्क नमाज़ में सजना ॥
हाथ बांधने-खोलने नहीं पड़ते ॥
जब बैठा सामने लाल हो ॥
फिर मथडे बनने नहीं पैंदे ॥

अमरदीप सिंह: सलाम बाबा जी। क्या हालचाल है?
बाबा रफ़ीक दुखी: ठीक हो?
अमरदीप सिंह: आप।
बाबा रफ़ीक दुखी: हाँ जी, ठीक-ठाक।

आशिक नमाज़ पढ़ते, आजान के बग़ैर॥
यह राज़ शायद तेरी समझ में नहीं आएगा॥

हज़रत बाबा हाजी शेर बरे-सगीर के शुरूआती मुस्लिम संतों में से थे। उन्होंने रहसयवाद में मस्त रहकर अपनी ज़िंदगी इस गाँव में गुज़ारी और सात सौ तीस सदी में आख़िरी साँस लिया।

कोई पीर मिला मुझको॥
अली पाक मुहब्बत का कोई पीर मिला मुझको॥
पीरों में से पीर, मेरा एक ही वली है॥
पांच नारा, पांच तनी एक ही नारा हैदरी॥

कई बार रह्सयमई प्रयोगों के दौरान अवाक् करने वाले पल भी आते हैं जब प्रयोग करने वाले जीव बेख़ुदी वाली हालत में पहुंच जाते हैं।

सो कहीऐ देवाना आपु न पछाणई॥
(राग माझ, गुरु नानक)

जो अपने सच को ना पहचाने वही भूले कहलाते हैं।
(राग माझ, गुरु नानक)

बरे-सगीर की रूहानी परम्परा में दीवाना होने का मतलब पागल होने जैसा है जो अपने-आप पर से काबू खो देता है। गुरु नानक के लिए दीवानगी की हालत के मायने अपने सच की पहचान करने में नाकामयाब होना है। परम-आनंद का पल वह है जब किसी को अपने अंदर बदलाव का अहसास होता है।

बाबा रफ़ीक दुखी: दीवान बाबा हाजी शेर उपमहाद्वीप के पहले वली थे। गुरु नानक यहां तशरीफ़ लाये थे, आपसी मेल जोल के लिए। गुरु नानक की सबसे बड़ी बात जो मेरे को प्यारी लगती है कि हक-हलाल का कमाएँ और बाँट कर खाएं। हमारे वलियों का भी यही तरीका था और रहेगा।

बाबा रफ़ीक दुखी हमें गुरूद्वारे ले कर गये जो उन्नीस सौ सैंतालीस में वीरान हो गया था।

अमरदीप सिंह: यह गुरुद्वारा, हज़रत बाबा हाजी शेर की मज़ार के नज़दीक है जो गुरु नानक के यहां आने की याद में बनाया गया था।

अमरदीप सिंह: सलाम बाबा जी।
बदर देवान: सलाम।
अमरदीप सिंह: ठीक हो जी?
बदर देवान: मैं ठीक हूँ। आप अपनी बताएं? अपने परिवार की बताएं?
अमरदीप सिंह: बस बाबा जी। बहुत अच्छा लगा आपसे मिलकर। आप भूरेवाला में कब से रह रहे हैं?
बदर देवान: मेरी उम्र इस समय पिच्चासी-छियासी वर्ष है। हमारे बुज़ुर्ग यहां रहते थे। यह जगह बाबा नानक साहिब की बैठक है। यहां जब बाबा नानक आये, तब वह पुरे इलाके में घूमे थे।यहां हमारे पास चार-पांच सिख रहते थे। भाई चैतर सिंह, गुरबख्श सिंह, दातार सिंह और हरनाम सिंह। बटवारे के दौरान वह पानीपत-करनाल चले गये।
अमरदीप सिंह: आपको क्या लगता है, गुरु नानक यहां क्यों आये होंगे?
बदर देवान: जब वह तलवण्डी ज़िला शेखुपुरा, जहां ननकाना साहिब का दरबार है, वहां से आये थे। यहां पेश किया। सवाल पेश किया। साहिब की दो हदें हैं। किसे पकड़ें और किसे छोड़े। इशारा हुआ कि नानक साहिब की दो हदें हैं। सच को पकड़ और बुराई को छोड़।

गुरु नानक के पद्चिन्हों पर हम बुरेवाला से नानक टिब्बा जा रहे हैं। यह गाँव पाकपटन के नज़दीक है।

अमरदीप सिंह: बुरेवाला से गुरु नानक और भाई मरदाना हड़प्पा से पूर्व की ओर अजोधन गये जो अब पाकपटन कहलाता है। उन्होंने इस स्थान पर ठहराव किया जो उस समय जंगल था और अब यहां नानक टिब्बा नामक गाँव आबाद है।

शेख़ इब्राहिम फ़रीद सानी के शागिर्द शेख़ कमाल जंगल में लकड़ी इकठ्ठी कर रहे थे तभी उनके कानों में गुरु नानक के गायन की आवाज़ पड़ी। भाई मरदाना रबाब बजा रहे थे।

तूँ आपे आपि वरतदा आपि बणत बणाई ॥
तुधु बिनु दूजा को नही तू रहिआ समाई ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

तू आप सर्वव्यापक हैं और सारी कायनात को बनाने वाला है।
तेरे बिना और कोई नहीं। तू कण-कण में समाया हुआ है।
(राग मलार, गुरु नानक)

इस शब्द का सार था कि पूरी कायनात उसी एक हाज़रा-हज़ूर की नुमाइंदगी करती है। गुरु नानक और भाई मरदाना को सुनने का अहसास साँझा करने के लिए शेख़ कमाल भागे-भागे शेख़ इब्राहिम के पास पहुंचे।

शेख़ इब्राहिम को शेख़ ब्रहम्म भी कहा जाता था और वह बाबा शेख़ फ़रीद की गद्दी पर बारहवें उत्तराधिकारी थे।

शेख़ इब्राहिम ने गुरु नानक और भाई मरदाने का हार्दिक स्वागत किया और मेज़बानी की। उन्होंने कुछ दिन तक पाकपटन में ठहराव किया।

अब हम बाबा फ़रीद की मज़ार पर जा रहे हैं जो पाकपटन शहर के बीच में है।

गंज-ए-शकर (बाबा फ़रीद) वलीयों का राजा ॥

इस शहर में बड़ी संख्या में तीर्थयात्री अपने प्रिय चिश्ती सूफ़ी संत को श्रद्धांजलि देने के लिए आते हैं।

बाबा मेरा सब वलीयों का राजा ॥
गंज-ए-शकर (बाबा फ़रीद) वलीयों का राजा ॥

तेरहवी सदी के चिश्ती सूफ़ी परम्परा वाले शेख़ फ़रीद का दरजा आस्था की दुनिया में बहुत ऊँचा है। उनके शब्दों की मिठास का वर्णन नामुमकिन है। उन्होंने अपने दयावान आचरण, निस्वार्थ सेवा की गरमाहट और समुद्र जैसी उदारता से गंज-ए-शक्कर का उपनाम अर्जित किया।

बाबा फ़रीद के मज़ार पर हमें दीवान शाहबुद्दीन बख़्तियार चिश्ती मिले।

दीवान शाहबुद्दीन बख़्तियार चिश्ती: बिस्मिलाह-रहमाने-रहीम मेरा नाम दीवान शाहबुद्दीन बख़्तियार चिश्ती है। मैं हज़रत बाबा फ़रीदउद्दीन मसूद गंज-ए-शक्कर के ख़ानदान में से सत्ताईसवीं पीढ़ी से हूँ। हज़रत बाबा फ़रीदउद्दीन का समय ग्यारह सौ तिहत्तर से बारह सौ छियासठ था। उनका सूफ़ी फलसफा कायनात में ऐकता के उसूल को एहम रखने से ताल्लुक़ रखता है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक का दर्शन भी यही है। वह मूलमंत्र की पंक्ति ੧ੳ ਂ के साथ शुरू करते हैं। एक की संख्या ऐकता को पेश करती है। बाबा फ़रीद के सबद गुरु ग्रंथ साहिब में भी शामिल हैं। यहां खड़े हो कर मैं मज़ार की दिवार पर उर्दू में लिखा हुआ पढ़ सकता हूँ

फरीदा खालक खलक महि खलक वसै रब माहि ॥
मंदा किस नो आखीऐ जाँ तिस बिन कोई नाहि ॥
(शेख़ फ़रीद)

फ़रीद ने फ़रमाया, रचयिता सृष्टि में है और सृष्टि रचयिता में लीन है।
जब सब कुछ उसी के कारण है तब मंदा किसे कहना है?
(शेख़ फ़रीद)

अमरदीप सिंह: यह एक ही बात है।

तेरा पाकपटन सुबहान अल्ला ॥
बाबा (फ़रीद) मेरा सब वलियों का राजा ॥

दीवान शाहबुद्दीन बख़्तियार चिश्ती: यह हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसूद गंज-ए-शक्कर की मज़ार है।

बाबा (फ़रीद) मेरा सब वलियों का राजा॥

दीवान शाहबुद्दीन बख़्तियार चिश्ती: यह हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसूद की मज़ार है और यह उनके सुपुत्र 'शहज़ादा वारिस' हज़रत बदरूदीन सुलेमान की मज़ार है।

फरीदा सकर खंड निवात गुड़ माखिओ माँझा दुध॥
सभे वसतू मिठीआँ रब न पुजन तुध॥
फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ॥
जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख ॥
(शेख फ़रीद)

फ़रीद ने फ़रमाया कि चाहे शक्कर, खांड, गुड़, शहद और दूध मीठे हैं
परन्तु इनकी मिठास इलाही की मिठास के बराबर नहीं हैं ।
फ़रीद ने फ़रमाया कि सादगी से मेरी भूख मिट जाती है।
दुनियावी लालसाओं में फंसने से ज़्यादा दुःख झेलने पड़ते हैं।
(शेख फ़रीद)

अपने स्वभाव के मुताबिक बाबा शेख फ़रीद ने ज़ोरवान को हलीमी बरतने का सुझाव दिया। कंगाल होने के बावजूद बाँट लो, किसी को भी कठोरता का कोई शब्द ना बोलो, क्योंकि कादर का निवास हर जीव में है। यह ही एक सच्चे श्रद्धालु के गुण हैं।

प्रसाद प्रेम का इज़्हार है। अटूट लंगर की परंपरा बाबा फ़रीद के जीवन के मूल सिद्धांतों में से एक थी जो पंजाबी संस्कृति के लिए अनुमोदन की मुहर बन गई। मौजूदा दौर में पाकपटन के हर गली-नुक्कड़ पर 'लंगर' की परंपरा सांस लेती है जिसे गंज-ए-शक्कर द्वारा एक संस्था का रूप दिया गया था।

अमरदीप सिंह: लंगर की रीत, बांटकर खाने का ख़्याल रूहानी झुकाव वाले संतों का सामान्य सूत्र है। मैं भाग्यशाली हूं कि मैं अन्य लोगों के साथ बाबा फ़रीद के दरबार का लंगर खा रहा हूं।

बाबा फ़रीद का पंजाबी साहित्य को बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने अपनी बाणी को पंजाबी बाना पहनाया ताकि रूहानी संदेश अवाम तक पहुंच सके।

इस दरगाह पर कव्वालियों की गूंज पड़ती है। इन कव्वालों ने पीढ़ी दर पीढ़ी सूफ़ी संतों के संदेश की मुँह ज़बानी धमाल डाली है।

काागा सब तन खाइयो, मोरा चुन चुन खाइयो मास॥
पर दो नैना मत खाइयो, इन्हें पिया मिलन की आस॥

हे कागा! तू चूंड-चूंड कर मेरा सारा मांस खा ले
परन्तु मेरे नैनों को ना खाना क्योंकि यह इलाही दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

महबूब फ़रीद ख़ान: हमारा ख़ानदानी सिलसिला है, हम जलंधर घराने के हैं। हमारे अब्बा अजदाद करीब सात सौ साल से कव्वाली सिन्फ़ में हैं। जब पाकिस्तान बना तो हमारे बुज़ुर्ग इंडिया से हज़ूर बाबा साहिब की सूफ़ी दरगाह पर पाकिस्तान आ गये। उनके प्रति उनका रूहानी प्रेम था। हमारे दादा जी यहाँ आ गये, वली अल्लाह के पास। फ़रीद-उद-दीन शहंशाह के दरबार में कोई फ़र्क नहीं है। सबको मुहब्बत, भाईचारे और अमन की लालसा है। सात सौ साल गुज़र चुके हैं। इंसानियत की प्रेरणा दे रहे हैं। इस दरगाह से लोगों को वही मुहब्बत, वही फैज़ मिल रहा है।

फरीदा तुरिया तुरिया जा॥
मन विच वल न पा॥

फ़रीद फ़रमाते हैं कि हे मनुष्य, ऐकता के रास्ते पर चलता जा।
मन में कोई शंका ना रख।

महबूब फ़रीद ख़ान: बाबा जी और बाबा गुरु नानक का आपस में रूहानियत का ताल्लुक था। बाबा जी गुरु नानक को भी बाबा फ़रीदुद्दीन सरकार से मुहब्बत, अमन और भाईचारे की खुशबु मिली। वह कहते हैं कि इंसानियत सब से बड़ा मज़हब है। इंसानियत से प्यार और इसका प्रचार दोनों ने किया। फ़रीदुद्दीन सरकार और बाबा गुरु नानक की मुहब्बत का इज़हार बाबा फ़रीदुद्दीन सरकार बाबा जी के शब्दों के तौर पर गुरु ग्रन्थ में है, वह मैं पेश करता हूँ,

फरीदा खाक न निंदीऐ खाकू जेड न कोइ॥

जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपर होइ ॥
(शेख फ़रीद)

फ़रीद फ़रमाते हैं कि ख़ाक की निंदा मत करो क्योंकि ख़ाक से महान कुछ नहीं।
हम जब तक ज़िंदा हैं ख़ाक हमारे पैरों के नीचे है। ज्यों ही मर जाते हैं तो यह हमारे सिरों के ऊपर आ जाती है।
(शेख फ़रीद)

फरीदा तुरिया तुरिया जा ॥
फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेस ॥
गुनही भरिआ मै फिरा लोक कहै दरवेस ॥
(शेख फ़रीद)

फ़रीद फ़रमाते हैं कि हे मनुष्य, ऐकता के रास्ते पर चलता जा।
फ़रीद फ़रमाते हैं, मेरा लिबास काला है और काला ही मेरा व्यवहार है।
मैं गुनाहों से भरा हुआ हूँ और इस के बावजूद लोग मुझे दरवेश कहते हैं।
(शेख फ़रीद)

अमरदीप सिंह: दो सौ साल से ज़्यादा समय तक बाबा फ़रीद के शब्द मुंह-ज़ुबानी आगे पहुंचते रहे। जब गुरु नानक ने पाकपटन में ठहराव किया तब उन्होंने यह सबद इकट्ठे किये जो बाद में गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किये गये। गुरु नानक के यहां आने की याद में पाकपट्टन के नानक टिब्बा गांव में यह गुरुद्वारा बनाया गया।

मैं पाकपट्टन से चलते समय सोच रहा हूँ कि बाबा फ़रीद और गुरु नानक के जीवन की कौन सी पूंजी अपने साथ ले जा रहा हूं?

तेरे दरसन कउ केती बिललाइ ॥
विरला को चीनसि गुर सबद मिलाइ ॥
(राग बसंत, गुरु नानक)

बहुत लोग हाज़रा-हज़ूर के दर्शनों की फरियाद लिये फिरते हैं।

किसी अनोखे जीव को ही हाज़रा-हज़ूर का अहसास विवेक द्वारा नसीब होता है।
(राग बसंत, गुरु नानक)

वहदत के अहसास के तलबगार तो बहुत हैं परन्तु अनोखे जीव ही इस राह पर चलते हैं।

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ३: रूहानी रवानगी (आत्मिक पथ)

ये चर्चा संकेतक गुरु नानक की पंजाब यात्रा के ऐतिहासिक और दार्शनिक पहलुओं में गहराई से जाने में सहायक है। यह उनकी विभिन्न आध्यात्मिक परंपराओं, विशेष रूप से बाबा फरीद के उत्तराधिकारियों द्वारा प्रतिपादित सूफ़ी संप्रदाय के साथ अर्थपूर्ण वार्तालाप को उजागर करता है। ये चर्चा बिंदु उस अंतर्धार्मिक संवाद और रुहानी आदान-प्रदान को स्पष्ट करते हैं जिसने गुरु नानक की खोज को परिभाषित किया। इसके अतिरिक्त, वे उन गहन दार्शनिक अंतर्दृष्टियों को प्रकट करते हैं जो धार्मिक सीमाओं से परे जाती हैं। इस यात्रा के माध्यम से, गुरु नानक एक रुहानी गुरु, सामाजिक सुधारक और विभिन्न परंपराओं में व्याप्त ज्ञान को संरक्षित एवं संश्लेषित करने वाले के रूप में उभरते हैं। उनके दृष्टिकोण निरंतर एकता, ईमानदारी, उदारता और भक्ति जैसे सार्वभौमिक मूल्यों पर जोर देते हैं, जो मात्र कर्मकांडों के पालन से अधिक गहराई को प्राथमिकता देते हैं।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. **सुल्तानपुर लोधी से गुरु नानक के प्रस्थान (१५०४ ईस्वी) का ऐतिहासिक महत्व क्या था?**
   एपिसोड बताता है कि १५०४ ईस्वी में, ३५ वर्ष की आयु में, गुरु नानक ने समाज की आत्मा को अज्ञानता की नींद से जगाने के लिए एक यात्रा प्रारंभ की। प्रस्थान करने से पहले, उन्होंने अपनी बहन बेबे नानकी से भेंट की और उनसे अनुरोध किया कि वे उनके परिवार की देखभाल करें। यह यात्रा उनकी रुहानी यात्रा की शुरुआत का प्रतीक है, जिसमें उन्होंने 'तौहीद' या 'एकत्व' की अवधारणा का अवलोकन, आत्मसात और प्रसार किया। यह कैसे एक महत्वपूर्ण क्षण का प्रतिनिधित्व कर सकता है जिसने गुरु नानक को एक रुहानी खोज पर निकलने के लिए प्रेरित किया?

२. **मलिक भागो का वृत्तांत १६वीं शताब्दी के पंजाब की सामाजिक संरचना के बारे में क्या अंतर्दृष्टि प्रदान करता है?**
   एपिसोड में एमिनाबाद में घटी एक महत्वपूर्ण वृत्तांत का वर्णन किया गया है, जहाँ एक स्थानीय जागीरदार मलिक भागो ने ऊँची जाति के लोगों के लिए एक 'ब्रह्म भोज' का आयोजन किया। गुरु नानक को भी आमंत्रित किया गया, लेकिन उन्होंने इसमें सम्मिलित होने से मना कर दिया। जब उनसे पूछा गया कि

उन्होंने निम्न जाति के बढ़ई भाई लालो के घर रहने का चयन क्यों किया, तो गुरु नानक ने उत्तर दिया कि वे मेहनत से अर्जित सादा भोजन, जिसे भाई लालो ने परोसा, जो दूध के समान मधुर स्वाद वाला है, को उस समृद्ध भोज से अधिक श्रेष्ठ मानते हैं, जो शोषण द्वारा अर्जित किया गया है और रक्त के समान स्वाद देता है। यह वृत्तांत गुरु नानक के समय में व्याप्त सामाजिक वर्गीकरण, आर्थिक शोषण और धार्मिक पाखंड को कैसे उजागर करती है?

३. गुरु नानक के सामाजिक सुधार दृष्टिकोण को समझने में सज्जन ठग के रूपांतरण का ऐतिहासिक महत्व क्या है?

मखदूम पुर पहोरन (तुलंबा) में, गुरु नानक की भेंट सज्जन ठग से हुई, जो एक धर्मशाला चलाता था, लेकिन यात्रियों को लूटता और कभी-कभी उनकी हत्या कर देता था। वह स्वयं को धार्मिक दिखाने के लिए एक मंदिर और एक मस्जिद बनाए हुए था ताकि अधिक यात्री उसके जाल में फँसें। गुरु नानक ने अपनी वाणी की शक्ति से उसका हृदय परिवर्तन कर दिया। यह ऐतिहासिक वृत्तांत गुरु नानक के उस दृष्टिकोण को कैसे प्रदर्शित करता है, जिसमें वे रुहानी जागृति के माध्यम से सकारात्मक परिवर्तन लाते हैं, बजाय इसके कि वे किसी को धिक्कारें?

४. पाकपट्टन में सूफ़ी परंपरा के साथ गुरु नानक की वार्तालाप मध्यकालीन भारत में अंतर्धार्मिक संवाद को कैसे दर्शाती है?

एपिसोड में गुरु नानक और भाई मरदाना की पाकपट्टन यात्रा का उल्लेख है, जहाँ उन्होंने शेख कमाल और बाबा शेख फरीद के १२वें उत्तराधिकारी शेख इब्राहिम से भेंट की। शेख इब्राहिम ने गुरु नानक और भाई मरदाना का गर्मजोशी से स्वागत किया और वे कुछ दिनों तक वहाँ ठहरे। यह वार्तालाप चिश्ती सूफ़ी आदेश और विभिन्न रुहानी परंपराओं के बीच खुले संवाद को दर्शाती है। इन अंतर्धार्मिक संवादों ने गुरु नानक को सार्वभौमिक सिद्धांतों को समझने और उन्हें अभिव्यक्त करने में कैसे योगदान दिया?

५. बाबा फरीद के दार्शनिक विचारों को संरक्षित करने में गुरु नानक की क्या भूमिका थी?

महबूब फरीद खान, पारंपरिक कव्वाली संगीतकारों के वंशज, बताते हैं कि बाबा फरीद और बाबा गुरु नानक के बीच आत्मिक संबंध था, और उनकी आपसी श्रद्धा इतनी गहरी थी कि बाबा फरीद की वाणियाँ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित की गईं। एपिसोड आगे बताता है कि बाबा फरीद की वाणियाँ २०० वर्षों तक मौखिक परंपरा के माध्यम से संप्रेषित होती रहीं। जब गुरु नानक पाकपट्टन में ठहरे, तब उन्होंने इन वाणियों को एकत्रित किया, जो बाद में 'गुरु ग्रंथ साहिब' में स्थापित की गईं। यह कैसे गुरु नानक की धार्मिक समावेशिता की दृष्टि को दर्शाता है?

६. लंगर की ऐतिहासिक प्रथा ने गुरु नानक के समुदाय-निर्माण के दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित किया?

एपिसोड में लंगर (नि:शुल्क सामुदायिक रसोई) की प्रथा को प्रेम की अमूर्त अभिव्यक्ति और बाबा फरीद के जीवन के मूल संवैधानिक सिद्धांत के रूप में वर्णित किया गया है, जो पंजाब की संस्कृति की पहचान बन गई। यह बताया गया है कि आज भी हर स्थान पर लंगर की परंपरा देखी जा सकती है, जिसे उन्होंने संस्थागत रूप दिया। इस पूर्ववर्ती परंपरा ने गुरु नानक के समावेशी रुहानी समुदायों के निर्माण के दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित किया, और यह बाद के समय में सिख पहचान के साथ इतनी दृढ़ता से कैसे जुड़ गई?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की मलिक भागो के प्रति प्रतिक्रिया उनकी ईमानदार श्रम बनाम शोषण की दर्शनिक सोच को कैसे प्रतिबिंबित करती है?

गुरु नानक का यह कथन कि परिश्रम से कमाया हुआ भोजन दूध के समान मीठा होता है, जबकि शोषण से प्राप्त भोजन रक्त के समान होता है, एक गहरी दार्शनिक अवधारणा को व्यक्त करता है। नानक कहते हैं, जो दूसरों का अधिकार छीनता है, वह ऐसा ही है जैसे कोई मुसलमान सूअर खाए और हिंदू गाय का मांस। रुहानी गुरु उन्हीं के साथ होते हैं जो दूसरों के अधिकारों का हनन कर अर्जित किए गए भोजन का सेवन नहीं करते। यह शक्तिशाली रूपक गुरु नानक की नैतिकता, ईमानदार श्रम, शोषण और अनुचित रूप से अर्जित संपत्ति की स्थिति के बारे में उनकी दार्शनिक सोच को कैसे व्यक्त करता है?

२. सज्जन ठग को कहे गए गुरु नानक के सबद उनकी सच्ची सेवा और आत्मनिरीक्षण की समझ को कैसे प्रकट करते हैं?

जब गुरु नानक ने सज्जन ठग का सामना किया, तो उन्होंने यह सबद गाया कि यदि सेवा करने, भलाई करने और बुद्धि रखने के बावजूद आचरण उचित नहीं है, तो इन सबका क्या मूल्य है? नानक कहते हैं, ध्यान करो ताकि नकारात्मकता में बंधे मन को मुक्त किया जा सके। एपिसोड बताता है कि एक सच्चा व्यक्ति वही है जो अपने आंतरिक आत्मचेतना से दिशा ग्रहण करता है। आत्मनिरीक्षण के अभ्यास से मन सांसारिक इच्छाओं के बंधनों से मुक्त हो सकता है। यह दार्शनिक दृष्टिकोण बाहरी धार्मिकता को कैसे चुनौती देता है और प्रामाणिक आंतरिक परिवर्तन पर बल देता है?

३. **गुरु नानक के दर्शन में 'दीवाना' (पागलपन) की अवधारणा रुहानी चेतना की समझ को कैसे स्पष्ट करती है?**

एपिसोड में बताया गया है कि कई बार रहस्यवादी अनुभवों से स्वाभाविक रूप से उमंग के क्षण आते हैं, जिनमें व्यक्ति खुद पर नियंत्रण खो देता है। गुरु नानक के शब्दों में उन्हें पागल कहो, जो स्वयं को नहीं समझते। इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि भारतीय रुहानी परंपराओं में 'दीवाना' का तात्पर्य आत्म-नियंत्रण की पूर्ण हानि से है। गुरु नानक के लिए, असली पागलपन वही है जब कोई आत्म-सत्य को नहीं पहचान पाता, जबकि सच्ची खुशी का क्षण वही होता है जब कोई व्यक्तिगत रूपांतरण का अनुभव करता है। यह 'पागलपन' की इस पुनर्व्याख्या से रुहानी चेतना की पारंपरिक समझ को कैसे चुनौती मिलती है?

४. **बाबा फरीद और गुरु नानक के संदेश सार्वभौमिक भाईचारे और एकत्व की अवधारणा में कैसे मेल खाते हैं?**

दीवान शहाबुद्दीन बख्तियार चिश्ती, जो बाबा फरीद की २७वीं पीढ़ी के वंशज हैं, बताते हैं कि सूफी परंपरा सृष्टि की एकता पर आधारित है। कथावाचक उत्तर देते हैं कि यही दर्शन गुरु नानक का भी है, क्योंकि जब वे जपजी साहिब 'इक ओंकार' से शुरुआत करते हैं, अंक '१' एकत्व को दर्शाता है। यह एकत्व पर दिया गया साझा जोर धार्मिक सीमाओं को कैसे पार करता है और सार्वभौमिक भाईचारे की नींव कैसे रखता है?

५. **'वंड छकना' (साझा करना) की दार्शनिक महत्ता सूफी और सिख परंपराओं में क्या है?**

एपिसोड में बाबा रफीक दुखी कहते हैं कि गुरु नानक का संदेश, जिसे वे बहुत पसंद करते हैं, यह है कि ईमानदारी से कमाओ और उदारता से बांटो। बाद में कथावाचक बताते हैं कि 'लंगर' (नि:शुल्क सामुदायिक भोजन), 'वंड छकना' की अवधारणा—जो समुदायों में साझा करने की परंपरा है—रुहानी संतों की आम विशेषता है। यह साझा नैतिक सिद्धांत, उदारतापूर्वक बांटने की परंपरा, मानवीय आपसी जुड़ाव और भौतिक संपत्ति के साथ उचित संबंध के गहरे दार्शनिक अर्थों को कैसे दर्शाता है?

६. **बाबा फरीद की धूल से संबंधित पंक्ति दोनों परंपराओं में विनम्रता के दार्शनिक सिद्धांत को कैसे दर्शाती है?**

एपिसोड में बाबा फरीद की यह पंक्ति उद्धृत की गई है कि धूल को मत अपमानित करो, क्योंकि धूल से महान कुछ भी नहीं। जब हम जीवित होते हैं, तो यह हमारे पैरों के नीचे रहती है, और जब हम मर जाते हैं, तो यह हमारे सिर को ढक लेती है। यह शक्तिशाली रूपक विनम्रता और मानव अस्तित्व के बारे में

गहरी शिक्षा देता है। यह दार्शनिक दृष्टिकोण गुरु नानक की विनम्रता संबंधी विचारधारा से कैसे मेल खाता है, और यह इन रुहानी परंपराओं के साझा नैतिक मूल्यों को कैसे प्रकट करता है?

७. एपिसोड गुरु नानक के धार्मिक परंपराओं और अनुष्ठानों के प्रति दृष्टिकोण को कैसे स्पष्ट करता है?
गुरु नानक ने अपनी यात्राओं के दौरान विभिन्न प्रकार की औपचारिक धार्मिक परंपराओं को चुनौती दी, जिनमें मलिक भागो की 'पवित्र दावत' से लेकर सज्जन ठग की दिखावटी धार्मिकता तक शामिल है। एपिसोड में ऐसे सबदों का उल्लेख किया गया है, जो बताते हैं कि अनैतिक कृत्यों को धार्मिक अनुष्ठानों द्वारा न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता। इसी तरह, इसमें एक सूफी व्याख्या भी शामिल है कि बिना किसी अजान के, भक्त अपने भीतर प्रार्थना करते हैं। प्रेम में डूबे वे सदा इबादत में रहते हैं। जब प्रियतम भीतर ही है, तो अनुष्ठानों की क्या आवश्यकता? यह दृष्टिकोण खोखली रस्मों की आलोचना कर एक प्रामाणिक रुहानी जुड़ाव पर कैसे बल देता है?

८. एपिसोड रुहानी ज्ञान और एकत्व की प्राप्ति के बीच संबंध को कैसे अभिव्यक्त करता है?
एपिसोड के अंत में गुरु नानक का सबद उद्धृत किया गया है कि सर्वव्यापक परमात्मा की झलक पाने के लिए बहुत से लोग विलाप करते हैं। विरले ही होते हैं जो यह समझ पाते हैं कि ज्ञान के माध्यम से ही सर्वव्याप्त को अनुभव किया जा सकता है। इसके बाद कथावाचक यह कहते हैं कि कई लोग एकत्व की प्राप्ति की इच्छा रखते हैं, लेकिन बहुत ही कम लोग वास्तव में इस पथ पर चलते हैं। यह बौद्धिक समझ, रुहानी अभ्यास और अंतिम एकत्व की प्राप्ति के बीच दार्शनिक संबंध के बारे में क्या सुझाव देता है, जो गुरु नानक और बाबा फरीद की विचारधाराओं का केंद्रीय तत्व है?